बादशाही के चार उसूल

bādshāhī ke chār usūl

Four Principles of the Kingdom

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 12]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of Pexels
https://pixabay.com/photos/abstract-backdrop-background-1850416/; Rev. H. Martin
https://freebibleimages.org/illustrations/hm-feeding-5000/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

भाईचारा	3
कमी से कसरत	4
सियासत बंद	6
तूफ़ान में हिफ़ाज़त	8
इंजील, यूहन्ना 6:1-21	10

जब ईसा मसीह ख़ुशख़बरी सुनाने लगा तो वह हमेशा अनगिनत लोगों से घिरा रहता था। और क्या अजब। उसकी बातें अनोखी थीं, उसके मोजिज़े देखकर लोग हक्का-बक्का रह जाते थे।

► **जल्द ही सवाल उठा कि क्या यह वह नहीं है जो आनेवाला है? क्या यह वह नहीं है जो दुश्मन को मुल्क से निकालेगा?**

ईसा मसीह उनकी सोच-बिचार जानता था। बेशक वह बादशाह था। लेकिन उसकी बादशाही इस दुनिया की नहीं थी। उसे सियासी बातों से सख़्त नफ़रत थी।

► **लेकिन अगर उसे सियासी बातें पसंद नहीं थीं तो वह किस क़िस्म की बादशाही लाना चाहता था?**

इसका जवाब जल्द ही पता चलेगा।

एक दिन ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ कश्ती में बैठ गया। उसने उन्हें हिदायत दी कि झील को पार करो। क्योंकि ख़िदमत करते करते सबको आराम की सख़्त ज़रूरत थी। किनारे पर पहुँचकर वह क़रीब के पहाड़ पर चढ़ गए।

शागिर्दों ने सुकून की साँस ली। वाह! इतने शोर-शराबा के बाद यह कितनी पुरसुकून जगह थी! कोई आबादी नहीं थी, बिलकुल वीरान जगह थी। कोई नहीं था जो उन्हें अपने सवालों और मिन्नतों से तंग करे। मगर यह क्या था? अचानक दो-चार लोग दूर से आते हुए दिखाई दिए। चलो, कोई बात नहीं। एक या दो लोगों को पता चला होगा कि हम यहाँ आए हैं। यह सोचकर शागिर्दों को कुछ तसल्ली हुई। लेकिन फिर वह चौंक उठे। पूरे का पूरा सैलाब उन पर टूट पड़ा। जल्द ही जगह की शांति काफ़ूर हो गई।

► **क्या हुआ था?**

लोगों ने अंदाज़ा लगाया था कि कश्ती किस तरफ़ चल रही है। तब वह पैदल से झील के किनारे चलते हुए उनके पीछे हो लिए थे। अब वह पहुँच गए।

► **क्या ईसा मसीह ने उन्हें भगाया? या क्या वह दुबारा कश्ती में बैठकर चला गया?**

नहीं। वह बैठकर उन्हें ख़ुदा का कलाम सिखाने लगा।

► **क्यों?**

उसे उन पर तरस आया। ईसा मसीह को हमेशा हम पर तरस आता है। उसे पता है कि हम उसके बग़ैर आवारा भेड़ें हैं। कि हमें अच्छे चरवाहे की सख़्त ज़रूरत है।

होते होते 5000 मर्द पहुँच गए। सिर्फ़ मर्दों का ज़िक्र है। उनके बाल-बच्चे भी काफ़ी तादाद में साथ आए होंगे। हो सकता है कि मिल-मिलाकर बीस हज़ार तक थे।

जल्द ही एक मसला मालूम हुआ। लोग इतने जोश से ईसा मसीह के पीछे भाग आए थे कि उनके पास खाना नहीं था।

ईसा मसीह हर एक की फ़िकर करता है। उनकी थकी-हारी हालत देखकर उसने अपने शागिर्द फ़िलिप्पुस से पूछा, "हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?"

उसको मालूम था कि क्या करेगा। तो भी उसने पूछा।

► **क्यों?**

वह शागिर्दों को अपनी बादशाही के बारे में कुछ सिखाना चाहता था।

► **क्या सिखाना चाहता था?**

यह कि इस बादशाही के कुछ अनमिट उसूल होते हैं। पहला उसूल,

भाईचारा

► **क्या ईसा मसीह ने फ़िलिप्पुस से इसलिए बात की कि वह खाने का इंतज़ाम करवाए?**

नहीं। वह चाहता था कि फ़िलिप्पुस ख़ुद सोच ले कि क्या करना है। कि खाना कहाँ से आएगा। जगह तो वीरान थी। आबादी थी ही नहीं जहाँ से खाना मिले।

भाईचारा इससे शुरू होता है कि हम दूसरों की फ़िकर करें। ईसा मसीह चाहता है कि हम एक दूसरे की इस तरह फ़िकर करें जिस तरह वह करता है।

अब फ़िलिप्पुस सचमुच फ़िकर करने लगा। उसने लोगों की तादाद गिनकर जवाब दिया, “अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।”

मज़दूर को दिन में चाँदी का एक सिक्का मिलता था। 200 दिन में वह इतने पैसे कमा सकता था कि इन लोगों को थोड़ा-बहुत मिल जाए।

अब दूसरे शागिर्द भी फ़िकरमंद हुए। वह पता करने लगे कि क्या किसी के पास खाना है? मगर किसी के पास खाना न था। आख़िरकार एक शागिर्द बनाम अंदरियास आया और कहा, “यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या हैं!”

भाईचारे की झलक।

आसमान की बादशाही का दूसरा उसूल,

कमी से कसरत

ईसा मसीह का पूछने का मक़सद पूरा हो गया था। शागिर्दों में फ़िकरमंदी की रूह आ गई थी। अब ईसा मसीह एक और बात सिखाना चाहता है।

► **वह क्या है?**

यह कि आसमान की बादशाही में कमी कसरत में बदल जाती है। ऐसी कसरत जो सबके लिए काफ़ी हो।

उसने फ़रमाया, “लोगों को बिठा दो।”

सबको बिठा दिया गया तो ईसा मसीह ने शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने रोटी और मछलियों के टुकड़े टुकड़े करके उन्हें शागिर्दों के सुपुर्द किए। शागिर्द यह टुकड़े बाँटने में जुट गए। लेकिन यह क्या था? शागिर्द तक़सीम करते गए मगर खाना ख़त्म न हुआ। लोग न सिर्फ़ जी भरकर खा सके बल्कि खाना बच भी गया। बचे हुए खाने के 12 टोकरे भर गए—हर शागिर्द के लिए एक।

जिस लड़के ने खाना दिया था उसके पास थोड़ा ही था। लेकिन ईसा मसीह ने यह लेकर कसरत का खाना मुहैया किया। जो थोड़ा-बहुत हमारे पास है ईसा मसीह उसे इतना बढ़ा सकता है कि सब सेर हो जाएँ।

लड़का यह भी कह सकता था कि मुझे छोड़ दो। यह बस मेरे लिए काफ़ी है। मैं अपना खाना ख़ुद खाऊँगा। लेकिन जब उसने अपनी नेमत ईसा मसीह के सुपुर्द की तो बेशुमार लोगों को बरकत मिली।

आसमान की बादशाही में जब हम अपना थोड़ा-बहुत माल ईसा मसीह को सौंप दें तो सबको बरकत मिलती है। तब कमी कसरत में बदल जाती है।

► **क्या आप चाहते हैं कि ईसा मसीह आप की कमी को कसरत में बदल दे?**

फिर उसे ईसा मसीह के सुपुर्द करें।

आसमान की बादशाही का तीसरा उसूल,

सियासत बंद

जहाँ आसमान की बादशाही होती है वहाँ सियासत बंद हो जाती है। जब लोगों ने यह मोजिज़ा देखा तो वह एक दूसरे से फुसफुसाने लगे।

► **क्या फुसफुसाने लगे?**

यह कि "यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।"

► **क्या मतलब? कौन-सा नबी?**

मूसा नबी ने पेशगोई की थी कि एक वक़्त आएगा जब

> रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। (तौरेत, इस्तिसना 18:15)

लोग समझ गए कि ईसा मसीह यही नबी है। कि वह आनेवाला अल-मसीह है। कि यह हमारा बादशाह बनेगा। मोजिज़े को देखकर वह इतने जोश में आए कि वहीं के वहीं उसे बादशाह बनाना चाहते थे। आप ख़ुद अंदाज़ा लगाएँ : 5000 मर्द क्या कुछ नहीं कर पाते जब वह मिलकर काम करें। साथ ऐसा बादशाह हो।

लेकिन ईसा मसीह को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं।

► **क्या उसने उनकी इज़्ज़तो-एहतराम क़बूल की?**

नहीं। उसको उनकी इस सोच से नफ़रत थी। लोग बस सियासी सोच रखते थे। वह उससे दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते थे। लेकिन ईसा मसीह इस दुनिया की आम बादशाही क़ायम करने नहीं आया था। वह आसमान की बादशाही लाने को आया था।

► **आसमान की यह बादशाही क्या है?**

यह एक रूहानी, एक अंदरूनी बादशाही है। यह बादशाही दिलों में राज करती है। यह सख़्त और सियासी दिलों को नरम करना चाहती है—ख़ुदा की बातों के लिए नरम, एक दूसरे के लिए नरम। यह हमें आसमान के शहरी बनाना चाहती है।

► **ईसा मसीह ने क्या किया जब लोग यों सोचने लगे?**

वह एकदम उनसे अलग होकर अकेला ही पहाड़ पर चढ़ गया।

आज भी बहुत-से लोग ईसा मसीह को अपने कामों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। वह उसे अपना बादशाह बनाकर दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते हैं। यों वह बादशाह को ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। लेकिन यक़ीन करो : जब लोग ईसा मसीह को अपने मक़सदों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं तब वह ओझल हो जाता है। वह सिर्फ़ उस वक़्त

हाज़िर होता है जब हमारे दिल उसके रूहानी काम के लिए खुले हों। जब हम मान जाएँ कि वह आसमान का बादशाह है।

► **शागिर्दों के साथ क्या हुआ?**

ईसा मसीह ने उन्हें एकदम कश्ती में बिठाकर झील के पार भेज दिया।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह भी सियासी बातों में उलझ न जाएँ।

आसमान की बादशाही का चौथा उसूल,

तूफ़ान में हिफ़ाज़त

अंधेरा छा गया और ईसा मसीह अब तक पहाड़ पर था। एकदम तेज़ हवा कश्ती पर टूट पड़ी। बड़ी बड़ी लहरें कश्ती से टकराने लगीं। कश्ती छोटे खिलौने की तरह इधर-उधर डगमगाने लगी। यह देखकर शागिर्द कश्ती को जल्द-अज़-जल्द अगले किनारे तक ले जाने में जुट गए। कश्ती को खेते खेते वह चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक चीख़ उठे। अंधेरे में एक शक्ल पानी पर चलती हुई नज़र आई।

► **क्या यह कोई भूत था जो उनको बरबाद करने आ रहा था?**

वह दहशत से पानी पानी हो गए।

तब ईसा मसीह की आवाज़ सुनाई दी, "मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।"

► **क्या हो रहा था?**

वह पानी पर चलते हुए उनके पास आ रहा था। वह पानी पर यों चल रहा था जिस तरह हम ठोस ज़मीन पर चलते हैं। कभी वह पानी के पहाड़ों पर चढ़ता नज़र आता कभी पानी की वादियों में ओझल हो जाता था। आख़िरकार वह कश्ती के पास पहुँच गया। शागिर्द उसे कश्ती में बिठाने को थे कि कश्ती उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

यह कैसी बात है। लोग ईसा मसीह को बादशाह बनाना चाहते थे जबकि उसे पानी और हवा पर पूरा इख़्तियार था। इसलिए आओ, हम उस पर ईमान रखें ताकि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उसकी हिफ़ाज़त पाएँ। जब तूफ़ान हम पर टूट पड़े तो हम मदद के लिए उसे पुकारें। जब पानी के पहाड़ हमसे टकराएँ तो उसकी क़ुरबत में महफ़ूज़ रहें।

► **यों शागिर्दों ने एक ही दिन में बहुत कुछ सीख लिया था :**

भाईचारा। आसमान की बादशाही में हम सब भाई-बहन हैं। जिस तरह ईसा मसीह हमारी फ़िकर करता है उसी तरह हमें एक दूसरे की फ़िकर करनी है।

कमी से कसरत। इस बादशाही में जो थोड़ा-बहुत मेरे पास है वह सबके लिए बरकत का बाइस बन जाता है।

सियासत बंद। जहाँ आसमान की बादशाही है वहाँ सियासत बंद हो जाती है।

तूफ़ान में हिफ़ाज़त। हमारे आक़ा को हवा और पानी पर इख़्तियार है। इसलिए जब ज़िंदगी के तूफ़ान हमें झकझोरते हैं तो हमें उसी के क़दमों में हिफ़ाज़त मिलती है।

इंजील, यूहन्ना 6:1-21

इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।) एक बड़ा हुजूम उसके पीछे लग गया था, क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीज़ों को शफ़ा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया था। फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों के साथ बैठ गया। (यहूदी ईद-फ़सह क़रीब आ गई थी।) वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने फ़िलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?” (यह उसने फ़िलिप्पुस को आज़माने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।) फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।”
फिर शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास बोल उठा, “यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या हैं!”

ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़ मर्दों की तादाद 5,000 थी।) ईसा ने रोटियाँ लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों में तक़सीम करवाया। यही कुछ उसने मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी भरकर रोटी खाई। जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।” जब उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।

जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।” ईसा को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

शाम को शागिर्द झील के पास गए और कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर कफ़र्नहूम के लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं आया था। तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द दहशतज़दा हो गए। लेकिन उसने उनसे कहा, “मैं

ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” वह उसे कश्ती में बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लमहे उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।